धरती पर स्वर्ग

क्षिप्रा नदी के तट पर बसी विशाल समृद्ध नगरी थी रंगावती। यहाँ का राजा लक्ष्मीपति न्यायप्रिय और पिता की तरह प्रजा का पालन करने वाला था। उसकी रानी कमलावती भी बहुत दयालु और परोपकारी थी। वहाँ के प्रजाजन उन्हें माता-पिता की तरह चाहते थे इतना सब होने पर भी रानी कमलावती के संतान नहीं थी। एक दिन संध्या के समय महल के झरोखे में बैठे राजा रानी बात कर रहे थे–

बात करते-करते वे बहुत उदास हो गये।

उस रात रानी महलों की खुली छत पर सोई हुई थी। चाँदनी रात में चारों तरफ चन्द्रमा की शीतल चाँदनी छिटकी हुई थी। तारे आकाश में झिलमिला रहे थे। ठण्डी हवा चल रही थी। दृष्य देखते-देखते रानी का हृदय आनन्द से भर गया।

रानी पलंग से उठी पद्मासन में बैठकर परमेष्ठी मन्त्र के ध्यान में लीन हो गई।

तभी महाराज लक्ष्मीपति ऊपर छत पर आ गये। रानी को ध्यान में लीन देखकर वे बहुत देर तक पलंग पर बैठे रहे। अचानक उन्हें छींक आ गई। छींक से रानी का ध्यान भंग हो गया।

कुछ देर बातचीत करने के बाद राजा रानी सो गये।

सोते हुए रानी को स्वप्न आया की पूर्णिमा का चन्द्रमा आकाश से उतरकर उसके मुख में प्रवेश कर रहा है।

कुछ देर बाद रानी को वही चन्द्रमा आँगन में हँसता दिखाई दिया।

रानी ने एकदम रोमांचित होकर आँखें खोली–

क्या मैं स्वप्न देख रही थी? कैसी विचित्र अनुभूति हुई मुझे?

सुबह रानी ने महाराज लक्ष्मीपति को रात का स्वप्न सुनाया। राजा प्रसन्न होकर बोले–

महारानी, लगता है आपकी वर्षों से छुपी मनोकामना अब पूर्ण होने वाली है।

रानी लजा गई।

स्नानादि के पश्चात् राजा ने ज्योतिषी को बुलाकर रानी का स्वप्न सुनाया। ज्योतिषी ने शास्त्र निकाले। लग्न कुण्डली बनाई और गणित लगाकर बताया–

राजन्! शीघ्र ही महारानी एक पुत्ररत्न को जन्म देगी। यह पुत्र परमवीर योद्धा होगा तथा अष्टांग निमित्त आदि विलक्षण विद्याओं का ज्ञाता होगा। किन्तु…